IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भिखारी ठाकुर के नाटक में सामाजिक चित्रण

डॉ० मंजू कुमारी
सहायक प्राध्यापिका, मैथिली,
कॉलेज ऑफ कॉमर्स आर्ट्स एंड साइंस,
पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

हिंदी भाषा एवं साहित्य को प्राणवान एवं लोकप्रिय बनाने में लोक भाषा एवं लोक साहित्य की निर्णायक भूमिका रही है। लोकसाहित्य समाज, सभ्यता और संस्कृति का दस्तावेज होता है। आम आदमी का सुख-दुख, हर्ष-विषाद, प्रेम संघर्ष इसमें सहज भाव से व्यक्त होता रहता है। जिजीविषा को अक्षुण्य रखने तथा प्रतिकूल परिस्थितियों में सतत संघर्षशील जीवन को गति देने में लोकसाहित्य का कोई सानी नहीं। मनुष्य अपनी मातृभाषा में ही चिंतन मनन द्वारा वैचारिक दृढ़ता एवं आंतरिक ऊर्जा प्राप्त करता है।

देश के औपनिवेशिक वातावरण ने लोकभाषाओं के प्रति उपेक्षा तथा हीनता का भाव उत्पन्न किया तथा अंग्रेजी के प्रति श्रेष्ठता का। हिंदी भी इस षड्यंत्र की शिकार हुई। हिंदी के साथ-साथ देश में बोली जाने वाली लोकभाषाओं के विकास के प्रति हम सावधान नहीं रह सके। फिर अंग्रेजी रानी बनकर अपने प्रभुत्व को जमाये रही, जबकि हिंदी की समृद्धि एवं उनके सम्मान के लिए लोकभाषा एवं साहित्य का संरक्षण आवश्यक था।

बदलते सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिदृश्य तथा वैश्वीकरण ने साहित्य एवं संस्कृति के साथ-साथ स्थानीय सौंदर्य, गंध एवं पहचान से भी हमें विमुख एवं उदासीन करना प्रारंभ कर दिया। बाजार की चकाचौंध से देशज स्वाद एवं अस्मिता पर खतरा उत्पन्न हुआ। जर्मन चिंतक जस्टस मोजेद ने भी स्वीकार किया कि बाजार स्थानीय सांस्कृतिक विशेषताओं और बहुलतावाद को नष्ट कर देता है। सर्वाधिक चिंत्य तो यह है कि इन सारी बदलती परिस्थितियों का हमें एहसास भी नहीं होता।

बिहार की लोक भाषाओं में भोजपुरी अपनी आबादी, क्षेत्र विस्तार एवं परिमाण में श्रेष्ठ है। यह बिहार, उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के बड़े भूभाग में बोली जाने वाली भाषा है। देश के कई महानगरों और विश्व के चौदह राष्ट्रों में भोजपुरी बोली, लिखी एवं पढ़ी जाती है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान के इसके अद्‌भुत सामर्थ्य को ग्रियर्सन ने भी स्पष्ट रूप से स्वीकार किया था। लोग कवी एवं नाटककार भिखारी ठाकुर भोजपुरी समाज साहित्य और संस्कृति के समर्थ प्रचारक एवं संवाहक थे। उनकी रचनाओं में भोजपुरिया संस्कृति सुरक्षित है। विदेशी शासन में अपनी नाटक मंडली स्थापित कर जनता के सुख-दुख की अभिव्यक्ति देना, हमारी समझ से भिखारी ठाकुर की अद्‌भुत संगठन शक्ति तथा ऊर्जा का परिचायक है। वह राष्ट्रीय अस्मिता के एक रक्षक एवं पहरेदार थे।

उत्तर भारतीय समाज में व्याप्त विधवा-विवाह, बेमेल-विवाह, जाति प्रथा, नशाखोरी एवं विषमता आदि पर आधारित उनके लोकनाटकों ने जनता का मनोरंजन तो किया ही, प्रबोधन भी कम नहीं किया। ऐसे नाटकों में वे भारतेंदु जैसे समर्थ नाटककार एवं जागरण के पुरोधा के रूप में दिखाई पड़ते हैं। दोनों स्वयं नाटक रचते और खेलते थे। निश्चित रूप से सामाजिक बदलाव की ज्वाला समान रूप से जल रही थी। दूसरी तरफ उनके सर्वाधिक लोकप्रिय नाटक 'विदेशिया' में वेश्या (माया) के फंदे में फँसे मौज मस्ती कर रहे पति (आत्मा) व्याहता (परमात्मा) को रात दिन चैन नहीं-

" पिया मोर गइलन परदेस, ए बटोही भइया ।
रात नाही नीन दिन तनी न चाएनमा ।।"

रात दिन व्याकुल रहने वाली यह अनुभूति प्रणाली कबीर की बिरहिणी आत्मा और जायसी की नागमती का स्मरण दिलाती है। अर्थात आदिमयुग से आती हुई लोक परंपरा एवं लोक आस्था का प्रतिनिधित्व भिखारी ठाकुर कर रहे थे। उसी परंपरा एवं आस्था ने कबीर और जायसी को भी प्रभावित किया होगा। कहना है कि भिखारी ठाकुर मानव मनोविज्ञान के अद्‌भुत अद्‌भुत पारखी थे। ऐसी क्षमता से संपन्न साहित्यकार सर्वकालिक एवं सार्वभौमिक सृजन कर पाता है। यहां यह भी द्दष्टव्य है कि इस सामर्थ्य से संपन्न साहित्यकार की रचना जनभाषा में हो या शिस्टभाषा में कोई अंतर नहीं पड़ता। लोकभाषा इटालियन में ही दांते ने 'डिवाइन कॉमेडी' की रचना की थी, जबकि उस समय की शिस्ट भाषा लैटिन थी। यूरोप में इस रचना को वही स्थान प्राप्त है, जो भारत में तुलसी के 'रामचरित्र मानस' को। इसी कौशल के कारण महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने इन्हें 'अनपढ़ हीरा' कहा तो प्राचार्य मनोरंजन प्रसाद सिन्हा ने 'भोजपुरी का शेक्सपियर' कहा। 18 दिसंबर 1897 को बिहार के कुतुबपुर नामक गांव में भिखारी ठाकुर का जन्म हुआ था। बहुमुखी प्रतिभा के धनी भिखारी ठाकुर कवी, गायक, गीतकार, नाट्य निर्देशन, संगीतकार होने के साथ-साथ कुशल अभिनेता भी थे। समालोचक श्री महेश्वराचार्य के अनुसार, भिखारी की शोभा मंच पर होती थी वह मंच के बादशाह थे। स्वांग के क्षेत्र में उत्तर कर वह किसी भी विषय का जीता जागता रूप खड़ा कर देते थे। जिन्होंने मात्र उनकी पुस्तिकाओं का ही अवलोकन किया है, वे नाटककार भिखारी को पूरा-पूरा नहीं जानते। भिखारी ठाकुर ने लोकनाट्य के क्षेत्र में अनेक प्रयोग किया। उन्होंने अपने नाटकों में मंगलाचरण और सूत्रधार जैसी परंपरागत विधियों में कुछ परिवर्तन किया। इतना ही नहीं लोक नाटक में 'मुक्त मंच' के प्रयोग का श्रेय भिखारी ठाकुर को जाता है। तत्कालीन समाज में व्याप्त प्रमुख समस्याओं को भिखारी ठाकुर ने अपने नाटकों का विषय बनाया।

लोकनाट्य लोगों के मनोरंजन के अपूर्व साधन होते हैं। ग्रामीण जीवन में अमर बेली के सदृश फैले ये नाट्य बाह्य आडंबर एवं तड़क-भड़क से सर्वथा विहीन होते हुए भी लोकप्रियता एवं ऐसोट्रेक की क्षमता में कथमपि हीन नहीं है। लोकजीवन के विभिन्न पक्षों का मार्मिक उद्‌घाटन जितनी सरलता से इनमें होता है, उतनी सुकरता से प्रायः अन्य विधाओं में नहीं। यद्यपि इनके रंगमंच नगर मंच से भिन्न अत्यंत निम्न स्तर के तथा अविकसित होते हैं, इनके पात्रों की वेशभूषा अत्यंत साधारण होती है, और इनकी भाषा अति ग्रामीण होती है, फिर भी इनके अंतराल में विनोद और उल्लास के सागर उमड़ते रहते हैं। इन लोकनाटकों के द्वारा पंडित, मूर्ख, शिक्षित, अशिक्षित, पुरुष-नारी, बाल-व्यस्क, नागरिक, ग्रामीण तथा उच्च और निम्न वर्ग के लोग सभी शायद समान रूप से रसग्रहण करते हैं। यही इनकी व्यापकता तथा मनोहारिता का ज्वलंत दृष्टांत है। लोक साहित्य की अन्य शाखाओं की अपेक्षा लोकनाट्यों की लोक जीवन में अधिक प्रतिष्ठा तथा महत्ता होती है, कारण ये सभी को उनके संस्कारानुसार अधिकाधिक परिणाम में रस प्रदान करते हैं। इनके द्वारा ऐसे वातावरण की निर्मिति हो जाती है जिससे इनके प्रदर्शन के समय दर्शकों को स्वतः आनंद की उपलब्धि होती रहती है, उनके भीतर सहज ही रस का संचार होता रहता है इस आनंदानुभूति के लिए उन्हें न किसी कल्पना का आश्रय लेना पड़ता है और न ही किसी तरह का अन्य मानसिक व्यायाम करना पड़ता है। भारत में नाटकों की उद्भावना के संबंध में जो कथा कही जाती है उससे भी ज्ञात होता है कि "ब्रह्मा ने सभी वर्गों के मनोरंजन के लिए ही एक सार्ववर्णिक पंचवेद नाटक का प्रणयन किया।" 1

लोकजीवन और लोक संस्कृति से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध होने के कारण संसार के सभी देशों सहित भारत के कोने-कोने में लोकनाट्य अपने विविध रूपों में प्राचीन काल से ही व्याप्त है। महाराष्ट्र के ललित और तमाशा, राजस्थान के कठपुतली और ख्याल, मालबा का मोंच, गुजरात के भवाई, बंगाल की यात्रा, ब्रज का रास, उत्तर प्रदेश की रामलीला, मिथिला के जट- जटिन, तथा सामा चकेवा आदि लोकनाट्य के श्रेष्ठ उदाहरण है।

नाटकों की उत्पत्ति के संबंध में भरत मुनि (लगभग तीसरी शताब्दी ईसापूर्व ने कथा बतलाई । इंद्र तथा अन्य देवताओं की प्रार्थना पर ब्रह्मा ने द्विज एवं द्विजेत्तर वर्णों के मनोरंजन के लिए ऋग्वेद से पाठ्य, सामवेद से गान, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस लेकर एक सर्ववर्णिक वेद की रचना की। 2 इससे स्पष्ट होता है कि नाटकों के लिए अपेक्षित कथा, गीत, अभिनय, रस, कथोपकथन आदि सभी वेद ग्रंथों में वर्तमान थे। वेदों के संवाद सूक्तों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सोम विक्रय के समय लोगों के मनोरंजन के लिए एक प्रकार का अभिनय किया जाता था। 3 सोम क्रयन का प्रसंग भी नाटकीयता से रहित नहीं था। इस तरह लोकनाट्यों का बीज संवाद सूक्त में ही पाया जाता है। रामायण और महाभारत में भी नाटकों की सूचना मिलती है। रामायण में नट-नर्तक आदि का उल्लेख अनेक प्रसंग में हुआ है 4। उसी प्रकार महाभारत में भी नट-नर्तक, गायक आदि का संकेत है। 5

भिखारी ठाकुर ने लोकनाट्य के क्षेत्र में अनेकों प्रयोग किया। उन्होंने अपने नाटकों में मंगलाचरण जैसे सूत्रधार जैसी परंपरागत विधियों में कुछ परिवर्तन किया। इतना ही नहीं लोकनाटक में 'मुक्त मंच'के प्रयोग का श्रेय भिखारी ठाकुर को जाता है। तत्कालीन समाज में व्याप्त प्रमुख समस्याओं को भिखारी ठाकुर ने अपने नाटकों का विषय बनाया। उन्होंने बिहार, बंगाल, उत्तर प्रदेश, नेपाल आदि में प्रचलित लोकनाट्य की अनेक लोकप्रिय विधाओं जैसे रामलीला, रासलीला, यात्रा, भांड, धोबी, नेटुआ, गौड का अध्ययन करके अपने नाटकों में उनका प्रयोग किया। जिसमें उन्हें अपार लोकप्रियता मिली। भिखारी ठाकुर की आयु लगभग 75 वर्ष होने के बावजूद जब वह नाटक में किरदार निभाते थे तो नवयुवक को भी मात देते थे। कभी वह परम तेजस्वी महर्षि का स्वांग रचते तो कभी घर-घर में आग लगने वाली कुटनी का। कहने का तात्पर्य यह है कि भिखारी ठाकुर जिस किरदार को नाटक में निभाते तो उसका स्वरूप जीवन्त कर देते थे। अपनी विभिन्न प्रकार की अदाओं से वह लोगों का मन मोह लेते हैं, कभी हंसाते हैं, रुलाते हैं और कभी सब शर्मिन्दा भी करते हैं। इन सब अदाओं से लगता है की नाटक कला का बीज ही उनके संस्कार में दे दिया गया हो, जो अब उसका वृक्ष बनकर कल्पवृक्ष की तरह सबको मनचाही वस्तु दे रहा हो।

जिस व्यक्ति के अंदर जिस वस्तु का बीज है और वह जब प्रस्तुत होने लगता है तो किसी के रोकने से रुकता नहीं चाहे वह रोकने वाले उनके माता-पिता ही क्यों ना हो। जिस तरह प्रहलाद को रोकने में उनके माता-पिता और असमर्थ रहे परंतु वह परम भक्त बन गए। भिखारी ठाकुर नाच के गिरोह को संगठित करते-करते सफल नाटककार बन गए। वह नाट्य शास्त्र का कभी अध्ययन नहीं किया परंतु उन्होंने नाटक लिखे और उसका सफल मंचन भी किया। वह एक दो नहीं वरन् अनेकों प्रकार के नाटक लिखे। 'विदेशिया' नाटक'नाटक भिखारी ठाकुर का प्रथम प्रयास और प्रथम नाटक है, जो लेखक की भरी जवानी की एक बानगी है जिसमें प्रवासी प्रीतम के लिए एक ग्रामीण भोली-भाली नायिका कराह रही है। 'विदेशिया' नाटक रचते समय नाटककार काफी प्रौढ़ हो चुके थे। उस समय तक उनकी 'शादी गवना रहुए भेल' और परदेश भी बहुत रह चुके थे। लेखक अपना ही अनुभव लेकर 'विदेशिया' नाटक में पदार्पण किया है। अपने इस समय के लिए उन्होंने कहा

तीस बरस के उमरि भइल।
बेधलारी तब कालिकाल के मइल ।।

'विदेशिया' नाटक में तीन मुख्य पात्र हैं, पहला विदेशी, दूसरा विदेशी की पत्नी सुंदरी और तीसरा बटोही, रखेलिन सहयोगी पात्र है। नाटक आरंभ होता है प्यारी सुंदरी और विदेशी के बीच बातचीत से। विवाह के कुछ दिनों बाद आर्थिक संकटों से जूझते हुए विदेशी पत्नी के आगे कोलकाता जाने की इच्छा जाहिर करता है। पत्नी पति की इस बात का विरोध करती है। पति-पत्नी को समझाने की कोशिश करता है कि गांव के सभी युवक कोलकाता जाकर कमाकर लौटते हैं और सुख से जीवन व्यतीत करते हैं, इसीलिए वह भी चाहता है कि कोलकाता जाकर मेहनत-मजदूरी करके कुछ धन कमाए और फिर अपनी प्यारी सुंदरी के साथ सुख-चैन से जीवन बिताए। लेकिन पत्नी नहीं मानती है और वह छिपकर कोलकाता चला जाता है। युवावस्था ऐसी है कि उसमें कली 'कलिकाल मर जात' मर जाती है। युवावस्था बहुत ही विषमकाल होता है। इस अवस्था में पड़कर सभी लोग बनैले हो जाते हैं। यह अवस्था एक तूफान लिए आती है। इस तूफान में सारा का सारा अस्तित्व नष्ट हो जाता है और सही गलत की सुध नहीं रहती है। जनमानस उस अवस्था का दुरुपयोग करता है। परंतु भलमानुस और विचारक उससे भी लाभ उठाते हैं।

भिखारी ठाकुर अपने युवा अवस्था में उठी हुई भावनाओं को अपने विचारों के साथ तारतम्य बैठाकर श्रृंखलावद्ध करते हैं और उसे दुनिया के सामने प्रस्तुत करते हैं। उसका संगीत रूप है 'बिरहा बहार' और आज के युग का जो भी बहार है वही बहार इन बहारों में विद्वान है। उनका एक बहार का रूप गबर घिचोर भी है। गबर घिचोर एक पारिवारिक कलह और खींचातानी पर आधारित नाटक है। पुत्र गबर के लिए दो पिता और एक माता आपस में लड़ रही है। गांव के पंच के सामने तीनों अपने अपने हिस्सेदारी का दावा करते हैं। जब गबर घिचोर को काट कर तीन हिस्सों में बांटने कि बात होती है तो ममतामयी सहम जाती है। । अंत में पंच अपने विवेक से फैसला लेते हैं और ममतामयी मां को पुत्र सौंप दिया जाता है। राधेश्याम नाटक को छोड़कर भिखारी ठाकुर के जितने भी नाटक एवं रचनाएं हैं सभी सामाजिक है। 'गंगा स्नान' नाटक का सामाजिक चित्र पाठकों ने देखा ही होगा। समाज के विभिन्न रूपों को लेकर भिखारी ठाकुर नाटकों का रचना करते हैं 'बेटी वियोग', 'भाई विरोध', 'विधवा विलाप', 'पुत्र बध', 'ननद भौजाई और भी जितने नाटक है सभी एक से बढ़कर एक सामाजिक मुद्दों पर लिखी गई है। कहीं भाभी अपने देवर के लिए तरस रही है तो कहीं माता अपने पुत्र के लिए रोदन कर रही है तो कहीं पत्नी अपने पति के वियोग में। इसी तरह विवाह की कुव्यवस्था पर एक तरफ विधवा विलाप कर रही है तो दूसरी तरफ बेटी। जनसाधारण मंच पर इन क्रियाकलापों को देखकर भले ही भूल जाए परंतु भिखारी ठाकुर समाज के अमूल्य सेवा ही किया जिसे भुलाया नहीं

जा सकता है। यद्यपि उनके नाटकों में प्रहसन की भी कोई कमी नहीं है, पाठक हंसकर रुकता नहीं है आगे वहां तक बढ़ता चला जाता है जहां तक नाटककार उसे ले जाना चाहता है। भिखारी ठाकुर के नाटकों में यही विशेषता है कि वह सभी के सभी मंच पर दिखाये जा सकते हैं। नाटककार स्वयं इन नाटकों को मंच पर खेल कर नित्य प्रति दिखा देता है। भिखारी ठाकुर के सभी नाटक दृश्य काव्य है। लोक नाटक को पढ़ भी सकते हैं लेकिन उसे देखकर जितना आनंद मिल सकता है उतना पढ़ सुनकर नहीं।

नाटक वस्तुतः देखने की चीज है। पठन-पाठन की उसमें बहुत अधिक गुंजाइश नहीं है। भिखारी ठाकुर ने वास्तविकता को दृष्टि में रखकर ही नाटकों की रचना की है। उनके सभी नाटक कुछ एक दो को छोड़कर छोटे और चुस्त दुरुस्त है मानो एकांकी नाटक हो। गद्य की उसमें कमी जरूर खलती है मगर भोजपुरी के सम्राट भिखारी ठाकुर ने जानबूझकर उस कमी को अपने नाटकों में रखा है। जब उनको स्वतः दृष्य प्रदर्शित करना है तो बहुत सी बातों को उसमें घुसाने से क्या फायदा? जहां भी अवसर आता है वह स्वयं मंच पर आकर सिलसिला ठीक कर लेते हैं। नई बातें गढ़कर पात्रों को भी वह यथाशीघ्र दृ श्य संयम करा देते हैं। नाटक की रचना में जो कमी रखते हैं प्रदर्शन में उसका वह आधिक्य कर देते हैं। आवश्यकता और अवकाश के अनुसार वह अपने नाटकों में रद्दो बदल भी कर दिया करते हैं अथवा उन्हें संक्षिप्त और प्रशस्त भी कर देते हैं। उनका ध्यान हमेशा दर्शकों की ओर ही रहता है। दर्शक जैसा चाहते हैं वह वैसा ही नकल उतारते हैं। जब भी उनको अवसर मिलता है वह लोगों को अपनी अद्वितीय प्रतिभा से उसकी ओर इंगित कर देते हैं। 'भाई विरोध' नाटक में वह इशारा करते हुए कहते हैं-

जे विसवासघात नर करिहन, घर में आग लगाई।
झगड़ा लगाबल पाप बरोबर, समुझ भारत के भाई ।।

भिखारी ठाकुर ने भारत के भाइयों को चेतावनी देते हुए कहा कि विश्वास घात नहीं करना चाहिए लेकिन कितनों ने उनके बातों पर ध्यान दिया? भारतवासियों ने यदि एक बार भी अवधान पूर्वक ध्यान दिया होता तो आज भारत-पाकिस्तान के बीच लकीर की नौबत नहीं आती। 'भाई विरोध' नाटक भिखारी ठाकुर की बहुत पहले की रचना है जिस समय हिंदू मुसलमान परस्पर मिलजुल कर रहते थे। फिर भी उनका भविष्य की चिंता थी और वह अपने भाईचारे को आग लगाने वाले को पहचानते थे। मोटी मोटी पुस्तक को लिखना एक बात लेकिन काम की एक बात ही लिख देना दूसरी बात। भिखारी ठाकुर पूर्ण रूप से व्यवहारिक व्यक्ति है। वह लिखते कम हैं और करते अधिक हैं। नाटक लिखना एक कला है और उसे दिखाना दूसरी कला है। भिखारी ठाकुर दोनों में पारंगत है। वार्तालाप लिखने में भिखारी ठाकुर एक ही है। 'भाई विरोध'नाटक की वार्तालाप का एक नमूना-

औरत - हमरा तऽ मिललन राम मरद मुहझउसा, राम, मरद मुहझउसा होय;

काइ विधि लिखि दिलहन लिलारनु हो राम!

सब धन लुटलसि हम भइलों भिखइनियां हम भइलीं भिखइनियां हो

डाकू मिलल वा पाटीदारनु हो राम!"

म्रद - "हमर तऽ मिलली राम नारी ही करकसा राम, नारी हो करकसा हो;

छुटलन भतीजा भीउजी भाईनु हो राम!"

वार्ता से भी अधिक सफलता भिखारी ठाकुर को पात्रों के नाम चुनने में मिली है। मानों पात्रों के नाम सुनते ही उनका चरित्र और व्यक्तित्व प्रदर्शित हो जाता है। 'भाई विरोध' नाटक के मुख्य पात्र उपकारी उपदर और उजागर है। परम उपकार करने वाला बड़ा भाई 'उपकारी' है। उपदर उससे छोटा भाई है जो विघ्न करने वाला है और सबसे छोटा भाई उजागर जिनका भविष्य उज्जवल है। उसका शील सौजन्य प्रस्फुटित भी नहीं होता कि उपदर उसे मौत की घाट उतार देता है। इसके मौत के बाद उसकी पत्नी रोती बिलखती रह जाती है। उपदर की पत्नी सारे फसाद की जड़ है। इसी तरह 'विधवा विलाप' नाटक के प्रधान पात्र हैं 'झांटुल' और 'उदवास' । झांटुल बुढ़ा वर है जो जल्दी ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। उदवास जो झांटुल का भतीजा है वह उसके पत्नी जो मसोमात हो गई है उसको उदवास करता है। उसे शांति से रहने नहीं देता है। कथन के बीच-बीच में

भिखारी ठाकुर प्रत्येक नाटक में बहुत ही ओज भरते रहते हैं। नाटक में ओज बहुत जरूरी है। नाटक जहां थोड़ा विश्राम चाहता है नाटककार वहां पर मनोरंजन के लिए गीतों का इस्तेमाल करता है। उनके गीत अत्यंत सटीक और सरस होते हैं। 'विधवा विलाप' और 'बेटी वियोग में विवाह के गीत बहुत प्रिय है -

१' कलसा के ऊपर चउमुख दीहल बा बार हो।
पंडित जी करत बाड़े वेद के उचार हो ।।
२'सुतल रहलों सपन एक देखलीं सपना बहुत अजगुत ए।
जनु केहु ब्राह्मण पोथी लेले आकर अस मोही देता उपदेश ए।।
१' ननद अपना भैया से बनवाद' हो, हमारा नाक के फुलनियां।
तीन पाढ़ के साड़ी मंगा द'झुला बऐगनइयआं । । ननद ।।

नाटक के लिए अनिवार्य गाने श्रम के परिहार के लिए है। इन गानों से नाटक पूर्ण हो जाता है और मंच गुंज जाता है। भिखारी ठाकुर के नाटक और गीत गरीब, मजदूर किसान एवं साधारण ग्रामीण जन की सुख-दुख का आईना बन गए। इसीलिए उन्हें उपेक्षित, प्रतारित वर्ग अपना जनकवि भी मानता है। अपने नाटकों के तमाशा कहने वाले भिखारी ठाकुर के नाटक कपोल कल्पना पर आधारित न होकर अपने परिवेश के विश्वसनीय चित्र हैं उन्होंने जो कुछ भी लिखा, उसमें दबे कुचले निम्न वर्ग की बेचौनी, बदहाली का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करके लिखा। उन्होंने भोजपुरी समाज की विशेषताओं के साथ-साथ उनकी कमियों को भी जमकर रेखांकित किया और समाज की जाति व्यवस्था पर प्रहार करते हुए शोषित, दलित, नारी तथा गरीब-गुरबों को अपने नाटकों का केंद्रीय विषय बनाया। भिखारी ठाकुर स्वयं पिछड़ी कहीं जाने वाली 'नाई' जाति के थे, इस कारण उन्होंने भोजपुरिया समाज की क्रूर जाति व्यवस्था के दंश को झेला था। यह भी एक वजह है कि उन्होंने अपने नाटकों में वर्ण भेद को कई बार मुख्य विषय बनाया। उन्होंने सिर्फ स्थानीय विषयों को ही नहीं उठाया अपितु राष्ट्रीय स्तर की समस्याओं को भी अपने लोकनाट्य में स्थान देकर सच्चे राष्ट्रभक्त होने का प्रमाण प्रस्तुत किया। इतना ही नहीं, बिना किसी राजनीतिक पार्टी से जुड़े अपने नाटकों के माध्यम से विदेशी सरकार के खिलाफ लड़ने के लिए जनमानस को तैयार करने में भी उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कहां जाता है कि गांधी द्वारा चलाए गए नशा मुक्ति अभियान को असरदार बनाने में उनके नाटक 'कलयुग प्रेम भा पिया निसइल' का जबरदस्त योगदान था। लोकमान के रचयिता भिखारी की लोकप्रियता भोजपुरी, मगही, मैथिली से विस्तार पाती हुई अलग-अलग प्रांतों में फैलने लगी। अपनी लोकप्रियता के बल पर उन्होंने भोजपुरी में भारतेंदु के समक्ष प्रसिद्धि अर्जित की। अपने समय में भिखारी ठाकुर और भोजपुरी एक दूसरे के पर्याय बन गए थे।

भिखारी ठाकुर आज भी भोजपुरी लोक संवेदना में इस तरह से रचे बसे हैं कि किसी भी तरह का बाजार बाद उन्हें भोजपुरी समाज से अलगा नहीं सकता। पैसों का जोर एवं बाजार का दवाव भिखारी के लोकगीतों के सामने घुटने टेकता नजर आता है। राहुल सांकृत्यायन ने भिखारी ठाकुर को भोजपुरी का शेक्सपियर उचित ही कहा है क्योंकि उनकी रचनाओं से भोजपुरी भाषा और साहित्य ठीक उसी तरह समृद्ध हुआ है जैसे शेक्सपियर की रचनाओं से अंग्रेजी भाषा और साहित्य समृद्ध हुआ है।

संदर्भ सूची -

1. भरत मुनि:- नाट्यशास्त्र, अध्याय 1 श्लोक 10-12 पृ०सं० 3; मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली (1964 ई०)
2. भरत मुनि :- नाट्यशास्त्र, 1/17 पृ०सं० 4; मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली (1964 ई०)
3. बलदेव उपाध्याय: संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ०सं०-453, शारदा मंदिर, वाराणसी (सप्तम संस्करण-1965 ई०)
4. वाल्मीकी रामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग 67, श्लोक 15; गुजराती प्रिंटिंग प्रेस मुंबई-1
5. महाभारत, वनपर्व, अध्याय 15, श्लोक 14, पृ०सं०-993